भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)
प्रेस रिलीज़

तारीख़: 26 जून, 2026.

ग़द्दार विश्वविजय, सीमा आज़ाद और उनके जैसों की दक्षिणपंथी अवसरवादी विघटनवादी लाइन का भंडाफोड़ करो !!
क्रांतिकारी ख़ेमे से अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद को ध्वस्त करो !!
अगस्त 2024 के पोलित ब्यूरो प्रस्ताव में निर्धारित केंद्रीय कार्यभार को लागू करने की ओर आगे बढ़ो !!

यह सत्य है कि पार्टी संकट में है, हमारा आन्दोलन संकट में है, आम लोग संकट में हैं, पर यह गलत है कि हमारी विचारधारा संकट में है, हमारी राजनीतिक लाइन संकट में है और पार्टी के संगठनात्मक सिद्धांत संकट में हैं। हमारी राजनीतिक लाइन में कोई संकट नहीं है, न ही हमारी पार्टी के संगठनात्मक सिद्धांतों में और न ही हमारी विचारधारा में। हमारी विचारधारा और राजनीतिक लाइन पूरी तरह संगत है। पर कुछ अवसरवादी ये साबित करने के लिए हर चेष्टा कर रहे हैं कि राजनीतिक लाइन और विचारधारा के भीतर संकट है। वे जहाँ भी और जब भी वे होते हैं अपनी लाइन को थोपने में पूरी तरह सुसंगत हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि वेणुगोपाल प्रकरण के ठीक बाद दक्षिणपंथी अवसरवादियों ने अपना नाटकीय प्रदर्शन शुरू कर दिया। उन्होंने वो सच्चाई जानी जो साथी माओ ने कही थी, कि “जहाँ भी कोई संसोधनवादी मिलता है वहाँ उसके विरुद्ध एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसे लड़ते हुए मिल जाएगा”। इसलिए अवसरवादियों के सामने सवाल यह था कि वे खुद को सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी शक्तियों से कैसे बचाएँ। इसलिए यहाँ तक कि किसी के द्वारा

वेणुगोपाल की समझौतावादी लाइन के खिलाफ संघर्ष शुरू करने से पहले, सामंती नौकरशाही दक्षिणपंथी अवसरवादी जिसने स्वयं को 'जी' पुकारे जाने से प्यार है; विश्वविजय जी कहने लगे कि वेणुगोपाल के खिलाफ संघर्ष के नाम पर अब पार्टी में वामपंथी भटकाव आ जाएगा। यह एक चतुर चाल थी। इस प्रकार, वेणुगोपाल के विरुद्ध हर संघर्ष को वामपंथी भटकाव का ठप्पा लगाने की कोशिश की गई। यही वेणुगोपाल कह रहा था; उसने कहा कि पार्टी वामपंथी भटकाव से ग्रस्त है। अवसरवादी वीवी से बेहतर वेणुगोपाल का रक्षक और कोई नहीं हो सकता, क्योंकि अवसरवादी विश्वविजय मानता है कि किसी व्यक्ति की राजनीतिक लाइन की रक्षा करना, उसे बचाने का सबसे अच्छा तरीका है। ऐसा कहकर वह वेणुगोपाल की विघटनवादी लाइन के खिलाफ सभी संघर्षों को तुच्छ दिखाना चाहता था। पर जैसा कि साथी माओ ने कहा था "क्रांतिकारी लहर को रोकने की कोशिश करने वाले अवसरवादी लगभग हर जगह मिलते हैं, पर लहर कभी नहीं रुकेगी"। विश्वविजय, बस इसके परिणाम देखो, वेणुगोपाल अलग-थलग पड़ गया, देवजी भी, उत्तर भारत के कई अन्य विघटनकारी भी और तुम्हारी भी यहीं स्थिति है, तुम्हारे साथ गद्दारों की बड़ी संख्या है। तुम हमारी पार्टी का बैच क्यों उठाए हुए हो? एक साथ दोनों नहीं हुआ करते, या तो तुम हमारे साथ हो या विघटनकारियों के साथ। पार्टी में अवसरवादियों के लिए कोई जगह नहीं है। गठन के बाद से ही, यहीं हमारी पार्टी का इतिहास है।

तुमने बलराज उर्फ बच्चा प्रसाद सिंह के साथ होने का चुनाव किया है। अब तुम ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला सकते हो कि तुमने उसके खिलाफ लड़ा और इस पर तुम पार्टी के साथ थे। पर हमेशा की तरह तुम एक तरफ नाटकीय रूप से व्यक्ति के खिलाफ लड़ने का दावा करते हो, वहीं दूसरी तरफ उसकी राजनीतिक लाइन की रक्षा करते हो — यही तुम्हारे 'संघर्ष' का अर्थ है। तुमने कहा कि "बलराज गलत है पर उसे सिर्फ संगठनात्मक सवालों के कारण निष्कासित किया गया।" इस तरह बलराज को एक व्यक्ति के रुप में उसकी अवसरवादी–विघटनवादी–संशोधनवादी लाइन से अलग बताने की कोशिश की गई; तुमने एक व्यक्ति विशेष से नफ़रत करना और उसकी राजनीतिक लाइन की रक्षा करना अपना फ़र्ज़ समझा। पर सच्चाई यह है कि बलराज को उसके द्वारा अपनाई गई राजनीतिक लाइन से अलग नहीं किया जा सकता। जो भी उसे प्रेम या घृणा करने का दावा करता है, उसे उसकी राजनीतिक लाइन को भी प्रेम या घृणा करना होगा। हम तुम्हें साथी माओ का एक उद्धरण याद दिलाते हैं; वे कहा करते थे कि "अमूर्त रूप में कुछ भी मानवीय नहीं है"; सभी मानवीय रिश्ते समाज के भीतर वर्गों के ठोस प्रकटिकरण हैं। बलराज अपने मन/शरीर में एक राजनीतिक शक्ति है और यह राजनीतिक शक्ति सर्वहारा लाइन की गद्दार है। पर चूँकि तुम बलराज की राजनीतिक लाइन का पालन करते हो और उस (बलराज) पर नफ़रत करने पर ज़ोर देते हो, ऐसे में हम पूछने को विवश हैं — फिर तुम्हें बलराज से प्रेम क्यों नहीं करना चाहिए? जब उसकी राजनीतिक लाइन तुम्हारी ही जैसी

है, तो तुम्हें उसके साथ मिलने से क्या रोकता है? फिर मानव संबंध क्यों बनाते हो — क्या तुम आनंद/सुख चाहते हो या आत्मा का कोई आध्यात्मिक भाव? वास्तविकता यह है कि बलराज या वेणुगोपाल के साथ संबंध तुम्हें कोई पारलौकिक आनंद या सुख नहीं देंगे; क्योंकि ये सारे गद्दार हमारी पार्टी और विश्व क्रांतिकारी शक्तियों द्वारा पूरी तरह से बेनकाब किए जा चुके हैं। इसलिए तुम कोई खुला संपर्क नहीं करोगे, उसे गुप्त रखोगे। पर वह पार्टी जिसका जन्म आधुनिक संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष से हुआ और जिसका इतिहास दक्षिणपंथी अवसरवादी लाइन के खिलाफ तीव्र संघर्ष का रहा है—वह तुम्हें ऐसा करने की इजाज़त नहीं दे सकती।

कुछ हमदर्दों का मानना है कि हमें उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह डर के कारण ये सभी पार्टी-विरोधी कुकर्म करने पर मजबूर हो रहा है। हम समझते हैं कि डर शासक वर्ग का एक हथियार है; जब शासक वर्ग अपने राजनीतिक स्वार्थ पिछड़ी विचारधारा के ज़रिए हासिल नहीं कर पाते, उसे डर के ज़रिये हासिल करने का प्रयत्न करते हैं। यह कुछ निम्न पूँजीपति वर्गीय तत्वों के मामलों में काम करता है — उन्हें पीछे खींच देता है या अवसरवादी/गद्दार बना देता है — पर यह सर्वहारा भावना पर असर नहीं करता। साथी जीएस, साथी कोसा दा, साथी राजू दा, साथी हिडमा दा और कई अन्य साथियों की शहादत ने सत्य सिद्ध किया है कि सर्वहारा को डर नहीं लगता। हम दोहराते हैं कि अवसरवाद डर या किसी अन्य भावना का सवाल नहीं है, यह राजनीति का सवाल है। डर केवल उन लोगों को भेद सकता है जिन्होंने मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवादी विचारधारा में अपनी दृढ़ता खो दी है। निम्न पूँजीपति सहयात्रियों में राजनीतिक-वैचारिक विचलन उन्हें अवसरवाद की ओर ले जाता है। कम्युनिज़्म की अनिवार्यता का वैज्ञानिक मार्क्सवादी सच को दृढ़ता से समझ पाने में निम्न पूँजीपति की असमर्थता उन्हें डर में धकेल देता है। सबसे पहले उनकी तर्कशक्ति खो जाने के साथ ही वे द्वंद्ववाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद पर पकड़ खो देते हैं और व्यक्तिनिष्ठ भाववाद में जा गिर पड़ते हैं। उत्तर आधुनिकतावाद और संशोधनवाद उनके सर्वश्रेष्ठ सहयोगी बनते हैं। यह उन्हें बतलाता है कि भावना, प्रेम, भय, व्यक्तिगत अनुभव और संवेदनाएँ प्राथमिक हैं; वे रेडिकल स्वतंत्रता और विकल्प के अधिकार के पोस्ट-मॉडर्न विचारों की नकल में माहिर हो जाते हैं। इन बुर्जुआ प्रभावों के कारण पार्टी ढाँचों से आने वाली हर चीज़ को वे शक्ति-संबंध और यांत्रिक मानते हैं। ये सब मिलकर निम्न पूँजीपति वर्गीय तत्वों को अवसरवादी और आगे चलकर विघटनवादी बना देते हैं। इसलिए हम कहते हैं कि विघटनवाद की जड़ें उत्तर आधुनिकतावाद में गहरी हैं। वर्तमान समय का हर अवसरवादी भी एक उत्तर आधुनिकतावादी है।

विश्वविजय 2024 से विभिन्न प्रकार की पार्टी-विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहे हैं। NCC और CC द्वारा उनसे राजनीतिक सवालों पर बातचीत कर समझाने के प्रयासों के बावजूद ये गतिविधियाँ समय के साथ बढ़ती गईं; वे अपनी पार्टी-विरोधी समझ का प्रचार करते रहे और अब वे किसी भी बैठक से

इनकार कर रहे हैं। उन्होंने पार्टी में तोड़फोड़ तक करने का प्रयास किया। उन्होंने एक पार्टी-विरोधी गुट बनाया और नेतृत्व तथा पार्टी लाइन के खिलाफ साज़िश रची। वे यह सब "नौवीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस" की राजनीतिक लाइन के वामपंथी भटकाव से लड़ने के नाम पर कर रहे थे, जिसने यह निर्धारित किया था कि नवजनवादी क्रांति (NDR) के दौरान पार्टी भूमिगत (UG) बनी रहेगी और संघर्ष का उच्चतम रूप सशस्त्र संघर्ष होगा।

इसके पार्टी-विरोधी समर्पणवादी लाइन के प्रमुख प्रमाण निम्नलिखित हैं:

1. वह मानता है कि पार्टी खुली होनी चाहिए और वैध कार्य करे; भूमिगत (UG) पर ध्यान केवल दमन को आमंत्रित करेगा और यह वामपंथी भटकाव है। उसने क्षेत्र में भूमिगत (UG) पार्टी कार्य रोकने के लिए सब किया। साथ ही वह पार्टी निर्माण का पक्षधर कभी रहा ही नहीं — पार्टी ढाँचें को उसने निराकार (Amorphous) रखा; इसकी नियमित बैठकें या ठोस निर्णय नहीं होते थे; यदि पार्टी निर्माण के नाम पर कुछ भी था तो वह विश्वविजय (VV) ही था। यह मेंशेविज़्म और विघटनवाद है।
2. विश्वविजय मुक्त प्रेम के पक्ष में है; ऐसा प्रेम जिसके बारे में साथी लेनिन ने 1915 में इनेशा आर्मंड को पत्र में लिखा था और जिसे लेनिन ने बुर्जुआई कहा था। पार्टी की महिला-पुरुष संबंधों की लाइन के ख़िलाफ़ जाकर विश्वविजय (VV) अपनी बुर्जुआ नारीवादी सिद्धांत को सामंती ब्राह्मणवादी पितृसत्ता के साथ मिलाकर मार्क्सवाद के भेष में प्रचारित कर रहा है।
3. वह जनवादी केंद्रीयता के सिद्धांत पर सवाल उठाता है; उसके लिए केंद्रियता उत्पीड़न है — वह पार्टी की उच्चतर कमेटी द्वारा नियमित वैचारिक-राजनीतिक मार्गदर्शन के बिना अति जनवाद चाहता है।
4. जनवादी केंद्रीयता के सिद्धांत को न अपनाकर विश्वविजय (VV) एक व्यक्ति का शो चलाना चाहता है; वही सब निर्णय ले और सबका पालन उसकी इच्छा के अनुसार हो। यदि उच्चतर कमेटी (HC) तालमेल करने के लिए आती है, तो वह इसे तानाशाही कह देता है। इस तरह वह अपने व्यवहार में अत्यंत सामंती और नौकरशाही बन गया है। पार्टी विरासत के नाम पर उसने कार्यकर्ताओं व जनमानस में सम्मान जमा लिया, पर वह इसे केवल पार्टी की राजनीतिक लाइन पर हमला करने और अपना सामंती घमंड मजबूत करने के लिए इस्तेमाल किया।
5. जब पार्टी ने उसके व्यवहार पर सवाल उठाना शुरू कर दिया तो उसने नेतृत्व के खिलाफ एक पार्टी-विरोधी गुट बनाया जिसमें यह निर्णय लिया गया कि तत्काल तालमेल नहीं किया जाएगा। इस गुट में उसने पार्टी लाइन का कड़ा विरोध किया और HC के नेतृत्व को अलग-थलग करने का कुप्रयास किया। उसके गुरु बलराज ने भी 2019 में साथी किशन दा के

खिलाफ यही किया था। गुरु जैसा, चेला वैसा — दोनों विनाश की ओर जाएंगे; बस समय का तक़ाज़ा है. विश्व-सर्वहारा शक्तियाँ उन्हें उपयुक्त उत्तर दे देंगी।

इसके अलावा विश्वविजय के साथ उसकी साथी सीमा आज़ाद (फ्री) भी है जिनकी "आज़ादी" का मतलब शासक वर्गों को शोषण और दमन की आज़ादी है — वह विश्वविजय के साथ तालमेल में काम करती रही। दोनों हमारे पार्टी की स्टेट कमेटी सदस्य रहे और अब दोनों सर्वहारा वर्ग के गद्दार बन चुके हैं। वे पार्टी के पुनरुद्धार प्रक्रिया (Revival Process) पर हमले करने के इरादे में दृढ़ हैं; सीमा उन सभी भेदियों, राज्य के दलालों और गद्दारों के साथ एकता बनाने की कोशिश कर रही है जो वेणुगोपाल-बलराज कैंप के आसपास हैं। जो भी भूमिगत (UG) पार्टी निर्माण के खिलाफ है, वह सीमा की मित्र सूची में है। हाल ही में उसने एक CIA एजेंट से मुलाकात की और NCC को निशाना बनाने व बदनाम करने के लिए उसके साथ सहयोग कर रही है। सीमा अमेरिकी साम्राज्यवाद और दलाल भारतीय राज्य के हाथ में हमारी पार्टी के पुनरुद्धार प्रक्रियाओं पर हमला करने का सबसे उपयोगी हथियार है। सीमा ने विश्वविजय के साथ मिलकर ऊपर उल्लिखित अवसरवादी लाइन ली है। पर उसके अंदर कुछ खास दुश्मन वर्गीय वैचारिक प्रेरणाएँ भी हैं। वह अपने अवसरवाद को जायज़ ठहराने के लिए उत्तर आधुनिक नारीवादी शब्दजाल का प्रयोग करती है। यह जानकर आश्चर्य होता है कि मालेमा सिद्धांत (MLM) से इतने भारी भटकाव के बावजूद वह खुद को मार्क्सवादी कहती है।

ऐसा कौन-सा मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी है जो पार्टी ढाँचें का हिस्सा बनने से इनकार करता है; जो महिलाओं के लिए विकल्प और रैडिकल फ़्रीडम जैसे उदार बुर्जुआ प्रचार में जीता है; जो क्वीयर थ्योरी में विश्वास रखता है; जो यौन अवसरवाद (पूर्व-वैवाहिक यौन संबंधों पर उसका रुख; बहु यौन संबंध, गैर-प्रतिबद्धता वाले संबंध आदि) को बढ़ावा देता है; जिसने कभी मजदूर वर्ग की महिलाओं के मुद्दों को प्राथमिकता से उठाया ही नहीं। माओवादी होने का दावा करने के बावजूद वह खुले तौर पर साथी लेनिन की महिला सवाल पर समझ का आलोचना कर सकती है — यह अवसरवाद की चरम सीमा है। एक व्यक्ति एक ही वक्त में कम्युनिस्ट और उदार बुर्जुआ नारीवादी नहीं हो सकता। सर्वहारा को जो चाहिए वह नारीवाद नहीं, बल्कि मार्क्सवाद है।

सीमा और विश्वविजय ने साज़िश रची, पार्टी के भीतर गुप्त रूप से कार्य किया और साथियों के बीच छिपकर मतभेद के बीजों को बोया; पर सार्वजनिक रूप से और पार्टी कार्यकर्ताओं के सामने वे अपनी गतिविधियों को छुपाने के लिए ढाल बनाते रहे। 2024 से यही उनकी कार्यप्रणाली रही है। पार्टी निर्माण में एक इंच भी आगे बढ़ने के लिए सीमा-विश्वविजय के अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष किए बिना हमारा काम नहीं चल सकता। इसलिए हमारी पार्टी के संविधान की अनुच्छेद 27(a) के अनुसार हमने सीमा आज़ाद और विश्वविजय को पार्टी से निष्कासित करने और उनकी बुनियादी पार्टी सदस्यता रद्द करने का निर्णय लिया है और इसके साथ हम उनके कैंप के

आसपास स्थित सभी पार्टी सदस्यों से अपील करते हैं कि वे पार्टी ढाँचें में शामिल हों और अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद को पराजित करें। सीमा और विश्वविजय ने पूरी पार्टी को अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद की ओर खींचने की कोशिश की—हमने इसलिए उनका हाथ छोड़ दिया; हम किसी विघटनवादी को पार्टी का सदस्य होने की अनुमति नहीं दे सकते। विघटनवाद और पार्टी सदस्यता एक साथ सहअस्तित्व में नहीं हो सकते।

जारीकर्ता:
उत्तर तालमेल कमेटी
भाकपा (माओवादी)